© 2015 IJSRSET | Volume 1 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

पत्रकारिता का उद्भव और विकास

डॉ.बिभाष चन्द्र
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय तमुलपुर, असम,भारत।

शोध आलेख सार :- वर्त्तमान समय में पत्रकारिता आधुनिक युग बोध, राष्ट्रिय चेतना, बौद्धिक जागरूकता एवं व्यापक जन संवेदना को सम्प्रेषित करने का सर्व सुलभ एवं समुन्नत माध्यम है। स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में पत्रकारिता शब्द के लिए अनेक पर्याय किन्तु बाद में पत्रकारिता शब्द ही प्रचलन में रह गया। आजकल इसके लिए "मीडिया" शब्द बहुत प्रचलित है। मीडिया भी दो भागों में समझा जाता है, जिन्हें विद्युत संचालित (Electronic Media) तथा मुद्रण सम्बद्ध (Print Media) कहते है। प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में चौथे पाये के रूप में मीडिया को आवश्यक अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। संस्कृत पत्र-पत्रिका राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

मुख्य शब्द:- पत्रकारिता, मीडिया, पत्र, पत्रिका, गजट, पत्रा, स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रियता इत्यादि।

सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य के मन में न केवल समाज में घटने वाली घटनाओं को जानने की इच्छा होती है अपितु देश और विदेशों में भी चल रही परिस्थितियों की जानकारी वह करना चाहता है। आज के बाजारीकरण और वैश्वीकरण के युग में उसकी जिज्ञासा और भी तीव्रतर होती जा रही है। ऐसी जानकारी को प्राप्त करने के लिए वह बहुत पहले से इच्छुक रहा है। ऐसे समाचारों को सार्वजनिक रूप में प्रसारित किया जाना पत्रकारिता के अन्तर्गत आता है।

वर्त्तमान समय में पत्रकारिता आधुनिक युग बोध, राष्ट्रिय चेतना, बौद्धिक जागरूकता एवं व्यापक जन संवेदना को सम्प्रेषित करने का सर्व सुलभ एवं समुन्नत माध्यम है। यह लोक मानस की सामुदायिक सहभागिता की वह जीवन्त विधा है, जिसमें जनता की भावना, आशा-आकांक्षा एवं सामाजिक परिस्थितियाँ मुखरित होती है। आजकल उसके सुख-दुख, व्यापक रूप में प्रचलित "पत्रकारिता" शब्द अंग्रेजी के "जर्नलिज्म" शब्द का अनुवाद है। मूल रूप में जर्नल शब्द की व्युतपत्ति फ्रांसीसी भाषा के "जर" और "जर्नल'' शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ इस भाषा में क्रमश: ''एक दिन" और "समाचार-पत्र''[1] है।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में पत्रकारिता शब्द के लिए अनेक पर्याय, यथा पत्रकारी, पत्रकला, संवाद पत्रकला, वृत्त विवेचन, समाचार पत्र तथा संपादन आदि शब्द प्रचलित थे। किन्तु बाद में पत्रकारिता शब्द ही प्रचलन में रह गया। किन्तु पत्रकारिता के पारम्परिक अर्थ और क्षेत्र में विस्तार होता गया। प्रो0 एडविन एमरी ने इसके विस्तृत अर्थ और क्षेत्र की ओर इंगित करते हुए कहा है, "परम्परागत रूप में पत्रकारिता का कार्य समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में समाचारों को एकत्रित करके लिखना, सम्पादन करके प्रकाशित करना या समाचारों पर टिप्पणी देना समझा गया है, किन्तु इसका क्षेत्र इससे अधिक विस्तृत हो गया है। उसमें सामुदायिक या आकर्षक लोक सामग्री का विविध संचार माध्यमों द्वारा प्रसार भी सम्मिलित है। आजकल इसके लिए "मीडिया" शब्द बहुत प्रचलित है। मीडिया भी दो भागों में समझा जाता है, जिन्हें विद्युत संचालित (Electronic Media) तथा मुद्रण सम्बद्ध (Print Media) कहते है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत रेडियो, दूरदर्शन आदि तथा प्रीन्ट मीडिया से समाचारपत्र एवं साप्ताहिक या मासिक पत्रिकायें आदि का बोध होता है। आजकल मीडिया का महत्त्व एवं प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ रहा है, हर कोई इसमें रूचि लेता है, चाहे सामान्य जनता हो, पदाधिकारी हो, नेता हो या सरकार के अन्तर्गत आने वाले अभिकरण हो।

सरकार अथवा शासन के तीन अंग मुख्य रूप से माने जाते है विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। किन्तु प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में चौथे पाये के रूप में मीडिया को आवश्यक अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। प्रजातन्त्र में विरोधी दल को आवश्यक माना जाता है, जो सरकार की कमियों या गलत कार्यों की आलोचना कर उसमें सुधार के लिए सरकार का ध्यान आकृष्ट करता है। आजकल मीडिया भी ऐसे कार्यों को अधिक प्रश्रय दे रहा है।

आधुनिक संदर्भ में पत्रकारिता के अन्तर्गत वर्तमान में प्रचलित समाचारों–विचारों का लिपिबद्ध मुद्रित प्रकाशन अर्थात् पत्र–पत्रिकायें ही सम्मिलित नहीं हैं वरन रेडियो, दूरदर्शन आदि जनसंचार माध्यमों द्वारा भव्य प्रस्तुति एवं आकर्षक वाचिक प्रसारण भी अन्तर्भूत है। पत्रकारिता के विषय एवं स्वरूप जीवन के हर पक्ष से सम्बद्ध हो गए है। पत्रकारिता सम्भवत: सबसे अधिक रोमांचक तथा जोखिमपूर्ण व्यवसायों में से एक है, जिसमें पत्रकारों को देश एवं दुनिया के दैनिक जीवन के कार्य–कलापों का ही नहीं, वरन वायुयानों की उड़ानों, युद्ध एवं खोज जैसे विषयों का संवाद देना भी आवश्यक होता है। ऐसे में कभी–कभी किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किए गए अथवा किए जा रहे अवैध एवं अनुचित प्रसंगों के उद्भेदन करने में पत्रकारों को जोखिम उठाना पड़ता है। कभी–कभी मार–पीट एवं जान गवाने की भी नौबत आ जाती है।

वर्तमान समय में जनसंचार के अंतर्गत अनेक अंग आते है, जिनमे समाचारपत्र, पत्रिकायें, पत्राचार, जनंसपर्क, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र एवं विज्ञापन आदि हैं।

आज के युग में न केवल प्रबुद्ध या शिक्षित, अपितु अनपढ़ व्यक्ति भी देश दुनियाँ में घटित या घट रही अथवा घटने वाली घटनाओं की जानकारी रखने में बहुत रूचि रखते है, जिनकी जरूरतों की पूर्ति के लिए उपर्युक्त साधन समाचारपत्र या दूरदर्शन आदि सबसे उपयुक्त एवं सशक्त साधन है।

संस्कृत साहित्य में "पत्र'' शब्द के अनेक अर्थ होते है

(क) पत्ता– **"पत्रं पलाशं छदनं दलं पण छद: पुमान्'** ।[2]

इस अर्थ में कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में इसका प्रयोग किया है –

"नीलोत्पलपत्रधारया[3]

(ख) पत्र शब्द का अर्थ "पक्ष या पंख" भी बताया गया है –

"गरूत्पक्षच्छद: पत्रं पतत्रं च तनूरूहम्" ।[4]

नैषधीयचरित में इसका प्रयोग है

"व्यर्थीकृतं पत्ररथेन तेन तथाऽवसाय व्यवसायमस्या:" ।[5]

(ग) पत्र, वाहन (सवारी) "सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम्" ।[6]

इस अर्थ में कालिदास ने रघुवंश में प्रयोग किया है

"दिश: पपात पत्रेण वेगनिष्कम्पकेतुना" ।[7]

इसी तरह श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में प्रयोग किया है

सहस्रपत्रासनपत्रहंसवंशस्य पत्राणि पतत्रिण: स्म'। [8]

(घ) पत्र शब्द का अर्थ बाण का पंख भी है। रधुवंश में इसका प्रयोग है

वामेतरतस्य कर: प्रहर्तुर्नखप्रभाभूषितकङ्कपत्रे'।[9]

(ड़) पत्र शब्द का (चिट्ठी) के अर्थ में भी प्रयोग कालिदास के किया है

" पत्रमारोप्य दीयताम्" ।[10]

प्राचीन काल में सन्देश पत्ते पर ही लिखकर भेजे जाते थे। जैसा कि कालिदास की शकुन्तला के द्वारा दुष्यन्त के पास अपना मनोरथ नलिनी पत्र पर भेजे जाने का वर्णन प्राप्त होता है।

"नलिनीपत्रे पदच्छेदभक्तया नखैरालिख्यताम् ।[11]

बाद में लेखन कार्य के लिए भोज पत्र का उपयोग बहुत दिनों तक होता रहा। आज भी कुछ पाण्डुलिपियाँ पुराने पुस्तकालयों में भोजपत्र में लिखी हुई दृष्टिगत होती है। इस प्रकार पत्ते पर संदेश लिखे जाने के कारण इसे "पत्र' कहते थे। बाद में यह शब्द "चिट्ठी' के अर्थ में (हिन्दी) रूढ़ एवं प्रचलित हो गया। बाद में चलकर हिन्दी साहित्य में पत्र के लिए पाती (रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन बचन

बाचु कुलघाती' ।।[12] (**'रामानुज दीन्ही यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती।।**[13] पतियाँ (**"प्रितम को पतियाँ लिखू जो कँहू होई विदेश तन मे मन मे नैन ताकों कहाँ संदेश ।"**[14]

पत्रिका ("पुनि: धरि धीर पत्रिका बाँची।[15] आदि शब्द प्रचलित हुए। संस्कृत वाङ्मय में समाचार शब्द आदिकाव्य रामायण में सम्यक् आचार अर्थात् अच्छे आचरण या उचित चाल चलन ("असत् स्त्रीणाम् समाचार"[16]) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। पचंतन्त्र ("ताम्बूलादि समाचारकर्त्तव्योहि सदा भवेत्[17]) में भी इसी अर्थ में समाचार शब्द प्रयुक्त हुआ है। तुलसीकृत रामचरितमानस में समाचार शब्द इसी कार्य की सूचना या खबर के अर्थ में प्रयुक्त हुआ।

"समाचार सब लोगन्ह पाए, लागे घर-घर होन बधाए ।[18]

प्राचीन काल में प्रकाशन और मुद्रण की सुविधाएँ तो होती नहीं थी, इसलिए यूरोप और पश्चिमी एशिया के देशों में जासूसों और संदेशवाहकों से खबरें इकट्ठा करने का काम किया जाता था। हमारे देश में बनजारे लोग जगह-जगह घूमते थे और समाचार इकट्ठे करके लोगों को गीतों और कहानियों के रूप में सुनाते थे।

ईसा मसीह से कुछ शताब्दियाँ पूर्व रोमन लोग नगरों के चौकों-चौराहों में हाथ से लिखे इश्तहार या समाचारपत्र दीवारों पर लगा दिया करते थे, जिनमें समाचार होते थे। इन्हें "एक्टाडायूर्ना' कहते थे। जुलियस सीजर की तमाम लड़ाइयों और उसके साम्राज्य के विस्तार का सारा विवरण इस "एक्टाडायूर्ना' में दिया जाता था।

मध्यकालीन भारत में संचार और संवाद-वहन के प्रबन्ध होते थे। मुस्लिम काल के आरम्भ से ही हिन्दुस्तानी बादशाहों ने समाचार संकलन को इतना महत्व दिया कि उन्होंने अपने साम्राज्य के एक-एक जिला के लिए संवाददाता या वाकियानवीस नियुक्त किए जो जनता की शिकायतों और कठिनाइयों के समाचार बादशाहों को पहुचाते थे। मुहम्मद बीन तुगलक (सन् 1325 ई. से 1351 ई.) और शेरशाह सूरी (सन् 1540 ई. से 1545 ई.) के जमाने में डाक और खबरें भेजने की अच्छी व्यवस्था थी। यहाँ तक कि राजधानी में बैठे शेरशाह को बंगाल की अन्तिम सीमा तक के समाचार प्रतिदिन मिला करते थे। मुगल काल में वाकियानवीसों का काम बहुत जोरों पर था। अबुल फजल ने अकबर के शासन काल के वाकियानवीसों के बारे में लिखा है- "देश में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में लिखी हुई जानकारी साम्राज्य की उन्नति और समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है। इससे जनता को भी बड़ा भारी लाभ है। वाकियानवीसी तो बहुत पुराने जमाने से चली आ रही है, लेकिन इसका सबसे अधिक लाभ "अकबर महान्' के शासनकाल में उठाया गया है।''

वाकियानवीसी, खुफियानवीस (गुप्त हाल लिखने वाले), स्वान्हनवीस (जीवनियाँ लिखने वाले), हरकारे (संदेशवाहक जो खबरे सुनाया भी करते थे), मुगल जमाने में पत्रकारों की विभिन्न श्रेणियों के नाम थे। "स्वान्हनवीस" आजकल की परिभाषा में एक प्रदेश का विशेष स्तम्भलेखक होता था और "वाकियानवीस' स्थानीय संवाददाता का काम करता था। औरंगजेब (सन् 1658 ई. से 1707 ई.) के शासनकाल में बाकायदा अखबार भी जारी हो गए थे, यद्यपि यह सब हस्तलिखित ही होते थे। बहादुरशाह के काल में हस्तलिखित 'मिराज-उल-अखबार" प्रसिद्ध था। दरबारों के अमीर-उमरा भी हस्तलिखित अखबार निकालते थे। इनको "अखबारनवीस' कहते थे। "अखबारनवीस' न तो छपते थे और न इनका प्रकाशन नियमित था, और जो चाहे इन्हें खरीद भी नहीं सकता था। इसलिए सही अर्थों में इन्हें समाचार-पत्र नहीं कहा जा सकता।

सन् 1566 ई. के लगभग यूरोप के शहरों में यह रिवाज था कि चौराहों पर खड़ा होकर एक आदमी हाथ से लिखे इश्तिहार को लोगों को माया करता था। यह इश्तिहार सरकार की स्वीकृति से लिखा जाता था और इसे सुनने बाले इस सेवा के लिए एक "गजीटा' दिया करते थे। ''गजीटा' उस समय का एक छोटा सिक्का होता था, इस तरह "गजट'" शब्द की व्युत्पत्ति हुई, जिसे आजकल सरकारी संकल्प या घोषणापत्र के लिये प्रयोग किया जाता है। इस तरह समाचार पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ। इंगलैंड में सोलहवीं शताब्दी में यह दस्तूर था कि जब कोई बड़ी घटना हो जाती तो सरकार इस प्रकार के इश्तहार जारी करती थी। आज भी समाचार शब्द का प्रयोग खबर के अर्थ में ही होता है। खबर देने वाले कागज बाद में अखबार कहे जाने लगे। यह खबर शब्द मूलत: फारसी का है, वहाँ इसका बहुवचन रुप "अखबार" होता है, (नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, स्वाधिगम सामग्री, प्रथम पत्र, जनसंचार एवं पत्रकारिता की अवधारणा एवं विकास) अर्थात् जिस कागज में बहुत सी खबरें प्रकाशित हो, उन्हें अखबार कहते हैं। बाद में इसी का परिष्कृत हिन्दी शब्द "समाचारपत्र" प्रचलित हुआ। आज भी कुछ समाचारपत्र के नामों में खबर शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे-"प्रभात खबर" । यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि ये "पत्र" या "समाचारपत्र" या "खबर", इन सभी में रोजमर्रे की घटित घटनाओं का विवरण रहता है। इस प्रकार ये समाचारपत्र दैनिक हुआ करते है।

पत्र शब्द से विकसित (पत्र+टाप) स्त्रीलिङ्ग रुप "पत्रा' एवं पत्रिका है। यह पत्रा शब्द पंचांग के अर्थ में प्राचीन काल से प्रयोग होता रहा है, जिसमें तिथि, नक्षत्र आदि की गणना रहती है। हिन्दी के रीतिकालिन कवि विहारी ने इस अर्थ में पत्रा शब्द का प्रयोग किया है।

"पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर मैं चहुँ पास ।

नित प्रति पून्यौई रहै आनन-ओप-उजास । [19]

आज भी पत्रा शब्द पंचांग के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

इस पत्रा से ही विस्तृत रुप स्- स्त्रीलिङ्ग में पत्रिका है। जैसे बाल शब्द से स्त्रीलिङ्ग में बाला एवं बालिका शब्द होता है। यहाँ भी पत्र शब्द से "क" प्रत्यय करने पर आ इत्व "इ" करने पर पत्रिका शब्द निष्पन्न होता है। व्याकरण के नियमानुसार पत्रा और पत्रिका का अर्थ "पत्र- स्त्रीलिङ्ग पत्रा, पत्रिका' समान ही है। किन्तु व्यवहार इनमें अन्तर देखा जाता है। पत्रा शब्द पंचाङ्ग के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जब कि पत्रिका शब्द का अर्थ इससे भिन्न हो गया है। इसका शाब्दिक अर्थ "चिट्ठी, कोई छोटा लेख या लिपि का टुकड़ा है। मानक हिन्दी कोश में इसका अर्थ "प्राय: नियमित रुप से निकलने वाली ऐसी पाठ्य-सामग्री जिसमें अनेक विषयों से सम्बद्ध लेख, कहानियाँ, कविताएँ होती है[20] । इन पत्रिकाओं की कई कोटियाँ भी है, जैसे - साहित्यिक पत्रिका, सामाजिक पत्रिका, सांस्कृ तिक पत्रिका, आध्यात्मिक पत्रिका, धार्मिक पत्रिका आदि। पत्र से इनमें अन्तर यह होता है कि समाचार पत्र प्रतिदिन प्रकाशित होने के कारण दैनिक कहलाते है, जबकि यह पत्रिका दैनिक नहीं होकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक होती है।

"समालोचको के अनुसार मुद्रित समाचार पत्र सबसे पहले यूरोप महाद्वीप के देशों में निकले। हालैण्ड में 1526 ई. में पहला समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ। इसके बाद 1610 ई. में जर्मनी में, 1622 ई. में इंगलैण्ड में, 1690 ई. में अमेरिका में, 1703 ई. में रूस और 1737 ई. में फ्रांस में पहला समाचार-पत्र निकला''[21] ।

हमारे देश में पत्रकारिता के प्रणेता वे अंग्रेज पत्रकार थे जो अट्ठारहवीं शताब्दी में इस देश में आए। 29 जनवरी, 1780 ई. को "जेम्स आगस्टस हिकी' ने जन संचार का यह जो महाशास्त्र भारत को दिया, उसका प्रयोग केवल आजादी के लिए ही नहीं हुआ। "जेम्स अगस्टस हिकी' ने कलकत्ता से "हिकीज बंगाल गजट एंड कलकत्ता जनरल एडभरटाइजर" प्रकाशित किया। लेकिन बाद में इसकी प्रसिद्धि "हिकीज गजट" के नाम से हुई। समाज में व्याप्त अज्ञान, असमानता, अंध विश्वास, अशिक्षा, कूप मंडूकता और अस्पृश्यता आदि विकारों के विरूद्ध भी पत्रकारिता ने जेहाद छेड़े। यह कहना सर्वथा सटीक होगा कि आधुनिक भारत की यह जो प्रतिभा हमारे सम्मुख उपस्थित है, इसे तरासने में भारतीय पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का अध्ययन सचमुच राष्ट्रियता के महासागर में अवगाहन करने के सदृश रोमांचकारी है, इससे ज्ञान के नूतन उन्मुक्त वातायान उद्घाटित होते हैं, क्षेत्र और भाषा के नाम पर स्वार्थों का ताण्डव कुछ भी रच लिया जाता है। महादेश भारत में सोच और समझ की समान अन्तर्दृष्टि ठोस स्वरूप में विद्यमान रही है। यही वह तन्तु है जो सकल समाज को जोड़े रखता है। भारतीय पत्रकारिता के लिए संघर्ष का भीषण काल फिरंगी हुकूमत का दौर रहा है, जब प्रतिबंध और प्रताड़ना ही पत्रकारिता के पुरस्करण रह गये थे, तब भी महादेश भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक सबाल-दर-सबाल विचारों के तार समान भाव से झंकृत होते थे और इसका प्रमाण है प्रेस की आजादी को कुचलने के लिए जेल-जप्ती-जुर्माने का अनवरत सिलसिला एवं तरह-तरह के कानूनी शिकंजें जो संघर्ष को दवाने के लिये जारी रहते थे। लेकिन भारतीय स्वतन्त्रता के दीवानों और कलम के योद्धा पत्रकारों के हौसलें उससे पस्त नहीं हुए। एक पत्रकार जेल गया नहीं कि दूसरा पत्रकार स्वतंत्रता के लिए जनचेतना जगाने के लिए सिर पर कफन बांध कर उस मशाल को थाम लेता था।

चाहे सन 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हो या कांग्रेस की स्थापना, लोकमान्य तिलक का देश निकाला हो, या गाँधी जी का डांडी मार्च, गोल मेज परिषद् हो या साइमन कमीशन का बहिष्कार, सती प्रथा के विरूद्ध लोक वातावरण बनाने का जेहाद हो या किसी नये आविष्कार की जानकारी जन-जन तक पहुँचाने की जबाबदेही, महामारी का प्रकोप हो या दुर्भिक्ष का संकट, और इस सबसे ऊपर राष्ट्र के नागरिकों को यह एहसास दिलाना कि भारत हमारा है, अंग्रेजो का नहीं विदेशी दासता के इस जुए को उतार फेंको जन-जन तक सूचना-संवाद के संचारण-संप्रेषण का दायित्व भारत की पत्रकारिता ने बखूबी निभाया, इस सन्दर्भ में विवेचन करने पर ज्ञात होता है कि संस्कृत पत्रकारिता का आयाम सम्पूर्ण भारत रहा है। संस्कृत में प्रकाशित दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, षाण्मासिक, वार्षिक आदि पत्र-पत्रिकाओं का लम्बा इतिहास एवं विपुल साहित्य हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से संस्कृत पत्रकारिता का प्रकाशन प्रारम्भ होता है। संस्कृत का प्रथम पत्रिका "काशीविद्यासुधानिधि' बनारस से जून, 1866 ई. में प्रकाशित हुई। उसके बाद अनेक प्रदेशों से अनके पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। सर्वप्रथम "डॉ. अर्नेस्ट हास' ने संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का विवरण प्रस्तुत किया जो 1876 ई. में छपा। दिसम्बर, 1882 ई. में "मैक्स मूलर" ने अपनी पुस्तक "इंडिया व्हाट कैन टू टीच अस' में उस समय तक प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया है। ''एल. डी. बर्नेट' ने 1892 ई. में प्रकाशित "ब्रिटिश कैट लॉग" में अनेक संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का परिचय दिया। उक्त विद्वानों ने संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन सम्बन्धी सूचना भर दी हैं। उनका विस्तृत विवरण नहीं है।

भारतीय विद्वानों में प्रथम विद्वान "अप्पाशास्त्री राशि वडेकर" ने संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा "संस्कृत चन्द्रिका" (मासिक पत्रिका) में की। उसमें प्रकाशित पत्रों की भी चर्चा है। सन् 1913 ई. में "संस्कृत रत्नाकर' नामक मासिक पत्र में "वासन्तिक प्रमोद' शीर्षक के अन्तर्गत अनेक प्राचीन पत्र–पत्रिकाओं का उल्लेख मिलता हैं। सन् 1913 ई. में "द इम्पीरियल पुस्तकालय, कलकत्ता' से प्रकाशित ग्रन्थ में भी संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं की सूची हैं। इस क्षेत्र में "गुरू प्रसाद शास्त्री, दीनानाथ शास्त्री सारस्वत, एम. कृष्णमाचारियार, गणेश राम शर्मा, रामगोपाल मिश्र, श्रीधर भास्कर वर्णेकर' आदि के निबन्ध भी पठनीय है।

सन्दर्भ सूची

1. पुरनल्स न्यू इंगलिश एनसाइक्लोपीडिया, खंड–7, पृ. 3445
2. अमरकोश. 2–4–14
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. 1–17.
4. अमरकोश. 2–5–36
5. नैषधीयचरित. 3–6
6. अमरकोश. 2–8–58.
7. रधुवंश. 15–48.
8. नैषधीयचरित. 3–16.
9. रधुवंश. 2–31.
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम्,
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. 3–14
12. रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड–5.52.08.
13. रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड–5.56.09
14. कबीरग्रंथावली
15. रामचरितमानस, 1.289.03
16. वाल्मीकि रामायण– सरस्वती, सितम्बर 1959 ई. पृ0 161–164.
17. डा.मीरा रानी बल– पत्रकारिता: सैद्धातन्तिक स्वरुप एवं विकास, पृ0 73.
18. रामचरितमानस, 1.285.01
19. बिहारी सतसई
20 मानक हिन्दी कोश, तीसरा खण्ड, पृ.1223
21 समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, वाराणसी, प्रस्तावना ।